॥ श्रीः ॥

विद्याभवन प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

१९३

श्रीमद्भट्टोजिदीक्षितप्रणीता

प्रौढमनोरमा

सशब्दरत्न'अनन्या'हिन्दीव्याख्योपेता

(कारकादव्ययीभावान्तो भागः)

व्याख्याकारः

डॉ० रमाकान्तपाण्डेयः

प्रवक्ता

व्याकरणविभागः

प्राच्यविद्याधर्मविज्ञानसंकायः

काशी हिन्दू विश्वविद्यालयः

चौखम्बा विद्याभवन

वाराणसी

प्रकरणानुक्रमणी

प्रकरणानि	पृष्ठाङ्काः
कारकप्रकरणम्	**१ - २३८**
✦ प्रथमाकारकम्	१ - ३६
✦ द्वितीयाकारकम्	३७ - १३४
✦ तृतीयाकारकम्	१३५ - १६१
✦ चतुर्थीकारकम्	१६२ - १८३
✦ पञ्चमीकारकम्	१८४ - २०५
✦ षष्ठीकारकम्	२०६ - २२९
✦ सप्तमीकारकम्	२३० - २३८
अव्ययीभावसमासप्रकरणम्	**२३९ - २७२**

॥ श्रीः ॥

श्रीमद्भट्टोजिदीक्षितप्रणीता

प्रौढमनोरमा

सशब्दरत्न'अनन्या'हिन्दीव्याख्योपेता

अथ विभक्त्यर्थाः

(कारकप्रकरणम्)

अथ प्रथमाकारकम्

प्रातिपदिकार्थविषयक विमर्श

व्याकरणशास्त्र में 'प्रातिपदिकार्थ' को नामार्थ पद से भी अभिहित किया गया है। क्या ये दोनों शब्द समानार्थक हैं? यह विचारणीय प्रश्न है।

यदि सामान्यतया विचार किया जाय तो यही प्रतीत होता है कि प्रातिपदिकस्य नाम्नः=अर्थः=प्रातिपदिकार्थः नामार्थः। ऐसी स्थिति में दोनों समानार्थक हैं। क्योंकि प्रातिपदिक व नाम की जिन अर्थों में शक्ति होगी, वे ही अर्थ प्रातिपदिकार्थ व नामार्थ कहे जायेंगे; अर्थात् प्रातिपदिकनिष्ठशक्तिविषयीभूतोऽर्थः प्रातिपदिकार्थः।

शक्तिविषयीभूत अर्थ है—

स्वार्थो द्रव्यश्च लिङ्गञ्च संख्या कारकमेव च।
अमी पञ्चैव नामार्थाः त्रयः केषाञ्चिदग्रिमाः ॥

इस शिष्टोक्त कारिका से दोनों शब्दों का समानार्थकत्व स्पष्ट ही है। स्वार्थादि-निरूपित शक्ति प्रातिपदिक में है, इसमें 'कुत्सिते' सूत्रस्थ भाष्य प्रमाण है।